

देवरनामः अपमृत्यु परिहरिसो अनिलदेव  
रचनेः श्री जगन्नाथ दासरु  
रागः कांबोदि  
ताळः झंपे

अपमृत्युपरिहरिसो अनिलदेव  
कृपणवत्सलने कावर काणे जगदोळगे॥प॥

निनगिन्नुसमराद अनिमित्त बांधवरु  
एनगिल्लआवाव जनुमदल्लि  
अनुदिनवुएम्म नीनुदासीन माडुवुदु  
अनुचितवुजगदि सज्जन शिखमणिये॥१॥

करुणाभिमानिगळुकिंकररु मूलोक  
धोरेनिन्नोळगिप्प सर्वकाल  
परिसरनेई भाग्य धोरेतनके सरियुंटे  
गुरुवरनेनी दयकरनेंदु बिन्नैपे  
(गुरुवरनेनी कृपकरनेंदु प्रार्थिसिदे)॥२॥

भवरोगमोचकने पवमानराय नि-  
न्नवरवनुनानु माधव प्रियने  
जवनबाधेय बिडिसु अवनियोळु सुजनरिगे  
दिविजगणमध्यदोळु प्रवर नीनहुदो॥३॥

ज्ञानायु रूपकनु नीनहुदो वाणि पं-  
चाननाद्यमररिगेप्राणदेव  
दीनवत्सलनेंदुना निन्न मोरेहोक्के  
दानवारण्यकृतानु सर्वदा एम्म॥४॥

साधनशरीरविदु नी दयदि कोट्टु  
साधरणवल्लसाधु प्रियने

वेदवादोतितजगन्नाथविठलन  
पादभजनेयनित्तु मोद कोडु सतत ॥५॥